

# समकालीन परिवार में वृद्धजनों की बदलती स्थिति

Dr. Mahesh Kumar Garg

Assistant Professor in Sociology, Government College, Sapotra, India

## सार

आज बुजुर्ग की समस्या अकल्पनीय है. वृद्धावस्था अभिशाप सदृश होती जा रही है. उनका जीवनयापन बहुत ही कठिन होता जा रहा है. कोई चलने में असमर्थ तो कोई अपाहिज सदृश बेड को ही अपनी नियति मानकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं. यदि वे उच्च वर्गीय हैं तो उनकी संतान ने नर्स या अटेंडेंट की व्यवस्था कर दिया है. उन लोगों का जीवन भौतिक सुख- सुविधा से परिपूर्ण हो, फिर भी समय किस तरह व्यतीत करें इसकी समस्या उन्हें आहत करती है. आँखें साथ नहीं देती जिसके कारण वे पढ़ नहीं पाते, दूरदर्शन पर कार्यक्रम भी देखना कठिन होता है. आखिर करें तो करें क्या? जिन बच्चों के लालन-पालन में उनका सारा जीवन व्यतीत हो गया वे बच्चे अपने परिवार में ही व्यस्त हैं. कोई विदेश में तो कोई अपने देश में ही व्यस्त हैं. कुछ मजबूरीवश लाचार हैं तो कुछ माता-पिता के कर्तव्य से विमुख. बेचारे बुजुर्गों का शेष जीवन अधीरता या व्याकुलता से प्रतीक्षारत घर के दहलीज़ पर टक-टकी बाँधे रहते हैं कि कोई तो आये जिससे दो बातें कर लें. समस्या यह है लोग इन बुजुर्गों के पास बैठना या बातें करना समय की बर्बादी समझते हैं. उन्हें यह समझ नहीं आती कि जीवन जीने की कला, कितनी महत्वपूर्ण बातें जो बुजुर्गों से सीखी जा सकती है, वे उन से वंचित रह जाते हैं. समाज का रूप ही परिवर्तित हो रहा है.

## परिचय

दादी-नानी की कथा लुप्तप्राय हो गई है क्योंकि नर्सरी से जो बोझ बच्चों पर डाल दी जाती है, बच्चे उसमें दब से गए हैं. उन्हें वक्त कहाँ कि दादी-नानी की कथा या सीख सुने. मुझे याद है मेरे पड़ोस में एक अम्माजी रहा करती थी. उनके घर में अपार वैभव था. उमका बेटा- बहू उसी शहर में अलग घर में रहते थे. शाम को बेटा अपनी माँ का हाल लेने आता था मात्र दस-पंद्रह मिनट के लिए. अम्माजी का ध्यान द्वार पर ही केंद्रित रहता था अपने बेटे की प्रतीक्षा में. व्याकुल रहती थी किसी से मन की बात करने के लिए. और बुजुर्गों से तो उनकी स्थिति बेहतर ही थी. मध्यमवर्गीय बुजुर्गों की स्थिति और भी दयनीय है. यहाँ भी समयाभाव. आज के आपाधापी युग में उनकी संताने संघर्ष कर रहीं हैं. अपने को उच्च वर्ग में लाने के लिए. अपने माता-पिता के लिए उनके पास भी समय नहीं है. बस वे आगामी भविष्य के लिए अर्थात् वे अपनी संतानों कि परवरिश में ही समय व्यतीत कर रहे हैं. अपने बहुमूल्य समय में माता-पिता के लिए समय देना तो नादाना ही हुआ न? अब उनकी क्या उपयोगिता? उनसे क्या लाभ जो अपने समय का दुरूपयोग करेगा! बेचारे बुजुर्ग उपेक्षित जीवन जी रहे हैं. पड़ोस की दया पर निर्भर रहते हैं. उनकी बिडम्बना यह है कि न तो वे अपनी स्थिति के विषय में कुछ कह सकते हैं, अपने बच्चों की कमी को अनदेखी तो कर सकते हैं. लेकिन किसी को कुछ कह नहीं सकते हैं. समाज में अपनी संतानों कि छवि को कम नहीं करना चाहते फलतः घुट-घुट कर जी रहे हैं. मध्यमवर्ग की सबसे अधिक बिडम्बना है दिखावा. चाहे वे उच्च माध्यमवर्गीय हों या निम्न मध्यमवर्गीय. झूठी शान के लिए वे अपना जीवन उत्सर्ग कर रहे हैं. या तो युवा हों या बुजुर्ग समाज में सबसे दयनीय स्थिति इन्ही वर्गों की हैं. वे सांस तो ले रहे हैं लेकिन स्वच्छ हवा में नहीं. संघर्षमय जीवन ही इस वर्ग की पहचान है. बुजुर्ग की स्थिति अत्यंत ही दारुण है. सरकार ने वृद्धाश्रम जगह-जगह खोल तो रखा है लेकिन पर्याप्त नहीं है. इस वर्ग के वृद्ध आश्रम में जाना भी नहीं चाहते क्योंकि इनके बच्चों की बदनामी न हो. आर्थिक दृष्टि से कमजोर या निम्न वर्ग के मनुष्य का जीवन ही आभाव से आरम्भ होकर अंत भी तड़प-तड़प कर समाप्त हो जाता है. इनके बच्चे स्वयं ही मजदूरी या किसी तरह जीवन यापन करते हैं. इस वर्ग के वृद्धों की न तो अपेक्षा है न इच्छा. कष्टमय जीवन व्यतीत करना ही इनका भाग्य है. वृद्धजन कम से कम आँखों के सामने अपने बच्चों को देखते तो हैं. आधी पेट खा कर खाट पर लेट कर बच्चों की राह ताकना प्रातःकाल से रात्रि तक प्रतीक्षा में ही व्यतीत हो जाता है. लेकिन बच्चों के दुःख तथा स्वयं की असमर्थता में तिल-तिल कर मरते रहते हैं. आशय यह है कि कोई भी वर्ग हो अधिकांश वृद्ध की स्थिति चिंतनीय ही है. इसके जिम्मेदार कहीं न कहीं एकल परिवार भी है. आज प्राथमिकताएं बदल रही है. मानव माता-पिता के कर्तव्य से विमुख हो रहा है. आवश्यकताएं सीमाहीन हो गयी हैं, आकाश की तरह अनंत हो गयी है. जिसमें जन्मदाता माता-पिता कि उपस्थिति व्यर्थ है. मैं



सुधीजनों से क्षमा-प्रार्थी हूँ क्योंकि कुछ मानव तो ऐसे निर्दयी, नृशंस नहीं हैं जो स्वयं के माता-पिता को बोझ समझें। मैं समाज के अधिकांश लोगों की बात कर रही हूँ सब की नहीं। प्रत्येक मानव की प्राथमिकता सर्वप्रथम अपने माता-पिता की देख-भाल, सम्मान होनी चाहिए। उन्हें आहत या अनदेखी नहीं करनी चाहिए। यदि वे संतुष्ट रहेंगे तो उनके आशीर्वाद से ही हमारा आगत भविष्य सुखमय हो जायेगा। अतः आज से हम सभी प्रण लें कि माता-पिता या किसी भी वृद्धों का दिल नहीं दुखायेंगे उन्हें उचित सम्मान देंगे। हरेक मानव का जन्म ही एक न एक दिन बुजुर्ग होने के लिए हुआ है। किसी पर आश्रित होना ही है। अतः यह एहसास नहीं होने देना है कि वे वृद्ध हो गए हैं वल्कि उनके मनोबल को ऊँचा उठाना है। मेरी राय तो यह है कि जहाँ 'बुजुर्ग पूजित होते हैं वहाँ देवता का निवास होता है। [1]

### विचार-विमर्श

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। यह हर स्थिति में होना ही है। जैसे- एक वस्तु से दूसरी वस्तु में परिवर्तन, प्रकृति में ऋतुओं का परिवर्तन, युद्ध के बाद शांति में परिवर्तन आदि। उसी प्रकार वृद्ध अवस्था भी परिवर्तन का ही एक हिस्सा है जिसे हम मानव जीवन का चक्र कह सकते हैं। प्रत्येक जीवात्मा जन्म के पश्चात् बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था से होकर गुजरता ही है। यही जीवन का अटल सत्य है। इसे स्वीकार करने के लिए हमें मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए तभी हम इस अवस्था में खुश और स्वस्थ रह सकते हैं।

इतिहास गवाह है कि प्राचीन समय में हमारे वृद्धों की स्थिति आज के समय से ज्यादा अधिक सम्माननीय और उत्तम थी। परिवार और समाज में उनकी एक अलग पहचान होती थी। चाहे परिवार बड़ा हो या छोटा, डोर वृद्धों के हाथ में हुआ करती थी। परिवार में किसी तरह के भी काम-काज बुजुर्गों के सलाह लिए बिना नहीं किया जाता था। परिवार के लोग अपने घर के बुजुर्गों पर विश्वास करते थे। वे जो भी कहेंगे या करेंगे उसमें हम सब की भलाई होगी। हमारे देश की संस्कृति में वृद्धों का स्थान परिवार और समाज में सर्वोच्च था। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की प्रणाली बहुत पुराने समय से ही चली आ रही है। संयुक्त परिवार का कारण भारत की कृषि प्रधान व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, प्राचीन परम्पराएँ तथा आदर्श आदि भी निहित हैं। लेकिन जैसे-जैसे समय में परिवर्तन होता जा रहा है वैसे-वैसे हर क्षेत्र में भी परिवर्तन होता जा रहा है।[2]

**वृद्धों के समस्या के निम्नलिखित कारण है-** 1. संयुक्त परिवार का विघटन 2. भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि 3. नई और पुरानी पीढ़ी के बीच भेद 4. शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की समस्या 5. आर्थिक समस्या और 6. व्यक्तिगत स्वार्थ

**संयुक्त परिवार का विघटन-** संयुक्त परिवार से तात्पर्य है- परिवार के सभी सदस्य जैसे दाद-दादी, चाचा-चाची, माँ-बाबूजी आदि सभी एक साथ मिल जुलकर एक घर में रहना। बदलते समय के अनुसार आज संयुक्त परिवार कि संख्या कम होती जा रही है। संयुक्त परिवार में सबसे अधिक देख-रेख बच्चों और बुजुर्गों की होती है। युवा वर्ग वृद्धों कि देख-रेख करते हैं और बुजुर्ग बच्चों की, जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकाश पूर्णरूप से होता है। लेकिन आज विडम्बना यह है कि एकांकी और स्वतंत्र जीवन जीने की सोच ने संयुक्त परिवार की व्यवस्था को अलग-थलग कर दिया है। हमारे वृद्धों की समस्याओं का मुख्य कारण संयुक्त परिवार का विघटन ही है, ऐसा कहा जा सकता है। बदलते समय के साथ आज की पीढ़ी को संयुक्त परिवार में रहना पसंद नहीं है। आज संयुक्त परिवार का चलन कम होता दिखाई दे रहा है। संयुक्त परिवार में हमेशा ही परिवार के प्रत्येक सदस्य का समर्थन होता है। परिवार के सभी सदस्य आपसी मेल-जोल से कार्यों को करते हैं जिससे सभी को खुशी प्राप्त होती है। पारिवारिक समृद्धि परिवार के सभी सदस्य के जीवन में खुशियाँ देती है। साथ मिलकर रहने की खुशी ही अलग होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है।

**भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि-** आज के समय में भौतिक सुख-सुविधाओं का अम्बार है। जिससे लोगों के रहन-सहन एवं जीवन शैली में तेजी से बदलाव आया है। इन्ही भौतिक सुखों कि चाहत में लोग परिवार और समाज से दूर होते जा रहे हैं। व्यक्ति अपने कार्य में इतना व्यस्त हो रहा है कि उन्हें अपने परिवार के साथ बैठने तक का फुर्सत नहीं है। जिसकी सबसे अधिक पीड़ा बुजुर्गों को हो रही है।

**नई और पुरानी पीढ़ी के बीच भेद-** प्रकृति का नियम है कि जो पैदा होता है उसे नष्ट भी होना है। मनुष्यों के साथ उम्र की जो सीमा है उसे भी प्रकृति ने ही तय किया है। विज्ञान ने भी यह सिद्ध किया है कि पुरानी पीढ़ी से नई पीढ़ी ज्यादा चालाक और बुद्धिमान होती है। नई शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक व्यवस्था से वर्तमान समय की पीढ़ी पिछली पीढ़ी के लोगों से बिल्कुल अलग है। नई विचार धारा और पुराने समय की विचार धारा में जमीन असमान का अंतर हो गया है। जिसके फलस्वरूप दोनों में एक आंतरिक संघर्ष और आपसी खिचातानी चल रही है। जिसे हर घर में देखने को मिल रहा है। इन दोनों पीढ़ियों के समस्याओं को कम करने के लिए पुरानी पीढ़ी को ही आगे आना होगा। पुरानी पीढ़ी में नई पीढ़ियों कि अपेक्षा अधिक योग्यता, सहनशीलता और परिपक्वता होती है। हमें उनकी छोटी-छोटी बातों को नजर अंदाज करना होगा नहीं तो बच्चे किसी भी कार्य के लिए या किसी भी संबंध में अपने बड़ों से राय लेना छोड़ देंगे। जिससे हो सकता है की वे नेतृत्व के अभाव में कहीं गलत कार्य ना कर लें।

**शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की समस्या-** ये मनुष्य के जीवन का सबसे बहुमूल्य और अंतिम पड़ाव है। इस अवस्था में वृद्ध को अनेक प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है। शारीरिक बदलाव के साथ-साथ मनुष्य में मानसिक बदलाव भी होता है, जिसके कारण बुजुर्ग अपने आप को कमजोर और अकेला महसूस करने लगता है। वैसे ये क्रियाएं सभी वृद्ध के साथ नहीं होता। कुछ व्यक्ति तो 60 वर्ष में भी जवान दिखाई देते हैं तो कुछ 40 वर्ष में ही वृद्ध दिखाई देने लगते हैं। इस उम्र में ही हमें अपनी की अधिक आवश्यकता होती है लेकिन आज समय की रफ्तार इतनी तेज हो गई है कि सभी अपने आप में व्यस्त हो गये हैं। किसी के पास किसी को बैठने का समय ही नहीं है। मेरी सोंच से सूरज वही है, चाँद वही है, दिन वही है, रात भी वही, समय भी वही 24 घंटे का ही है तो बदला क्या है। सिर्फ सोंच ।

**आर्थिक समस्या-** प्रत्येक वृद्ध इतना सौभाग्य शाली नहीं होता है कि वह जीवन के अंतिम पड़ाव तक आत्मनिर्भर बना रहे। आर्थिक समस्या भी वृद्धों के लिए मुख्य समस्या है। यह समस्या वृद्धों के लिए सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। जो वृद्ध सरकारी नौकरी में होते हैं उन्हें तो आर्थिक परेशानी नहीं होती है क्योंकि उन्हें पेंशन मिलता है। परन्तु सभी वृद्ध सौभाग्यशाली नहीं है, जो जीवन के अंतिम पड़ाव तक आत्मनिर्भर रहे। अनेक वृद्धों को आर्थिक रूप से अपने परिवार जनों पर आश्रित रहना पड़ता है। जिससे परिवार में उन्हें अनेक बार असहज परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जीवन की इस अंतिम पड़ाव पर वृद्ध का आत्मनिर्भर होना उनके लम्बे जीवन के लिए वरदान जैसा है। अतः आर्थिक निर्भरता भी वृद्ध लोगों के लिए एक मुख्य समस्या है।

**व्यक्तिगत स्वार्थ-** आज लोग स्वार्थी हो गए हैं। जिन वृद्धजनों के पास धन-संपत्ति होता है उसे तो धन-संपत्ति के लालच में घर वाले सेवा करते हैं लेकिन जिनके पास धन-संपत्ति नहीं होती है उनकी तो हालत का पूछिए मत। कहने में दुःख होता है। हमारे यहाँ कि एक कहवत है, “आज हमारी कल तुम्हारी देखो भईया पारा-परि”। अर्थात् आज हम हैं कल इस जगह तुम होगे। अतः परिवर्तन तो प्रकृति का नियम है।

जिस तरह डोर से कटी हुई पतंग सहारा ढूँढती है। उसी तरह वृद्ध व्यक्ति भी अपने आप में टूटकर सहारे के आकांक्षी हो जाते हैं। और इस स्थिति में उनको जो सहारा देता है वे उसपर अपना सर्वस्व लुटाकर उसकी अधीनता स्वीकार कर लेते हैं कि वह भी उसके प्रति उसी तरह आभारी बना रहे। जीवन भर कि व्यस्तता बुढ़ापे में आराम और शांति चाहती है। बुजुर्ग की बस एक ही अभिलाषा होती है भर पेट भोजन और सम्मान। आज का समाज जाने अंजाने में विनाश की ओर बढ़ता जा रहा है। इसका मूल कारण कहीं न कहीं नैतिक पतन है। प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में यह अहसास दिलाते हुए कहा है कि “बुजुर्ग अपने बच्चों से कई उम्मीद रखते हैं। अतः आज की युवा पीढ़ी को उनकी उम्मीदों पर खड़ा उतरने का प्रयास करना चाहिए। माता-पिता का ऋण चुकाया तो नहीं जा सकता है किन्तु उसकी सेवा सुश्रुषा कर के ऋण को कुछ कम जरूर किया जा सकता है”। “मनुस्मृति में भी इस बात का प्रमाण मिलता है कि बुजुर्गों का नित्य आशीर्वाद लेने एवं उनकी सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल इन चारों गुणों की वृद्धि होती है”। अतः आज की युवा पीढ़ी को उनका सम्मान करना चाहिए न कि सिर्फ इस्तेमाल।

### परिणाम

जीवन का उत्तरार्द्ध ही वृद्धावस्था है। वस्तुतः वर्तमान के भागदौड़, आपाधापी, अर्थ प्रधानता व नवीन चिन्तन तथा मान्यताओं के युग में जिन अनेक विकृतियों, विसंगतियों व प्रतिकूलताओं ने जन्म लिया है, उन्हीं में से एक है युवाओं द्वारा वृद्धों की उपेक्षा। वस्तुतः वृद्धावस्था तो वैसे भी अनेक शारीरिक व्याधियों, मानसिक तनावों और अन्यान्य व्यथाओं को लेकर आगमित होता है और अगर उस पर परिवार के सदस्य भी परिवार के बुजुर्गों/ वृद्धों को अपमानित करें, उनका ध्यान न रखें या उन्हें मानसिक संताप पहुँचाएं, तो स्वाभाविक है कि वृद्ध के लिए वृद्धावस्था अभिशाप बन जाती है। इसीलिए तो मनुस्मृति में कहा गया है कि-“जब मनुष्य यह देखे कि उसके शरीर की त्वचा शिथिल या ढीली पड़ गई है, बाल पक गए हैं, पुत्र के भी पुत्र हो गए हैं, तब उसे सांसारिक सुखों को छोड़कर वन का आश्रय ले लेना चाहिए, क्योंकि वहीं वह अपने को मोक्ष-प्राप्ति के लिए तैयार कर सकता है।”

आश्रम व्यवस्था समाप्त हो जाने के फलस्वरूप शनैः शनैः परिवार में वृद्धों के महत्व का हास होने लगा। उन्होंने भी वानप्रस्थ/संन्यास सभी व्यवस्थाओं को त्यागकर अपने को महज सांसारिक जीवन तक समेट लिया। इसीलिए उनकी स्थिति व सम्मान में और गिरावट आई। वस्तुतः वैयक्तिक एवं सांसारिक दोनों दृष्टियों से वानप्रस्थ अवस्था का महत्व था। इसीलिए वर्तमान में वृद्धों की अवस्था में कुछ अधिक ही जटिलता का समावेश हुआ है और रही-सही कसर पूरी हो गई है, भौतिकवादी पाश्चात्यी तौर-तरीकों से आप्लावित इस वर्तमान की नवीन जीवन शैली से।

#### वृद्धावस्था की समस्याएं

वस्तुतः वृद्धावस्था जीर्ण-शीर्ण काया का पर्याय है इसीलिए इसे रोगों, शारीरिक व्याधियों और कष्टों का केन्द्र माना जाता है। बुढ़ापा स्वयं एक बीमारी है। एक पोरी, हजार बीमारी आदि कहावतें इसी ओर संकेत करती हैं। वैसे भी वृद्ध की शारीरिक क्षमता चुक गई होती है इसलिए उसे उचित सहारे व देखभाल की आवश्यकता होती है। उपचार भी अपरिहार्य हो जाता है, पर वर्तमान की पीढ़ी परिवार के वृद्धों को बोझ मानती है। इसलिए उनकी उचित देखभाल के अपने दायित्व से मुकर जाती है, इसलिए वृद्धों को कष्टसाध्य जीवन बिताने के लिए विवश होना पड़ रहा है। वैसे बहुत बार परिजनों का स्वार्थ, परिजनों की स्वयं की समस्याएं या अर्थाभाव भी वृद्धों की उचित देखभाल पर नकारात्मक प्रभाव अंकित करता है। कारण चाहे कुछ भी हो पर वृद्धों को तो दुःखमय जीवन बिताने के लिए विवश तो होना ही पड़ता है।

यथार्थ यह भी है कि पीढ़ी-अन्तराल (Generation-Gap) के कारण, पश्चिमी रंग ढंग के कारण और नवीन सोच के कारण भी पुरानी और नई पीढ़ी में टकराव दृष्टिगोचर हो रहा है। वृद्धों के लिए यह मानसिक दुःख की अवस्था है कि उनके परिवार के युवा उनकी अवज्ञा करें, उन्हें महत्व न दें और उन्हें पुराने ख्यालातों का निरूपित करें।

आज की पीढ़ी न तो वृद्धों के अनुभवों से कुछ सीखने को तैयार है और न ही उनके नियंत्रण में रहने को। वैसे दोनों पीढ़ियों की विचारधारा में टकराव का होना भी जटिलता की रचना कर रहा है, वृद्ध चरित्र, रहन-सहन, वेशभूषा, आचार-विचार के मामले में सांस्कृतिक मान्यताओं का रूप देखना चाहते हैं और नई पीढ़ी से ऐसी ही अपेक्षा करते हैं, पर नई पीढ़ी इन सब बातों को दकियानूसी और पिछड़ेपन का प्रतीक मानकर इनको नजर अन्दाज कर जाती है। यह देखकर वृद्ध मानसिक संताप का अनुभव करते हैं। उन्हें नई पीढ़ी पतनशील दृष्टिगोचर होती है।

यह तो सत्य है कि वृद्धों को शारीरिक कष्टों के दौर से तो गुजरना पड़ता ही है, क्योंकि “वृद्धावस्था का अर्थ ही है शक्तिहीन शरीर, रुग्ण काया और शिथिल मन।” पर वृद्धों को आर्थिक तंगी की हालत से भी कष्टपूर्ण साक्षात्कार करना पड़ता है यहाँ तक कि कभी-कभी तो उन्हें दो जून की रोटी और सिर छिपाने के लिए छत भी नसीब नहीं होती है और उनके परिजन उन्हें मारे-मारे फिरने और वृद्धाश्रमों में शरण लेने को विवश कर देते हैं। कहीं-कहीं तो वृद्धों से नौकरों जैसा कार्य भी लिया जाता है और उन्हें रूखा सूखा/बचा-खुचा ही खाने को प्रदान किया जाता है। ऐसे वृद्धों की संख्या गिनी-चुनी ही होगी, जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या सम्पन्न होंगे। हकीकत तो यह भी है कि वृद्धों को मानसिक सहारे की आवश्यकता होती है। जीवन की इस संध्या में वे तन्हाई, उपेक्षा एवं निरर्थकता का अनुभव न करें। इस हेतु उन्हें यह अहसास कराने की आवश्यकता होती है कि वे अकेले, महत्वहीन और अनुपयोगी नहीं हैं। पर हकीकत तो यह है कि वर्तमान पीढ़ी अपने आप में इतनी मस्त-व्यस्त है कि उसे वृद्धों की ओर ध्यान केन्द्रित करने की फुरसत ही नहीं है। आज परिवार के वृद्धों से कोई वार्तालाप करना, उनकी भावनाओं की कद्र करना, उनकी सुनना, कोई पसन्द ही नहीं करता है। जब वे उच्छ्वल, उन्मुक्त, स्वच्छंद, आधुनिक व प्रगतिशील युवाओं को दिशा-निर्देशित करते हैं, टोकते हैं तो प्रत्युत्तर में उन्हें अवमानना, लताड़ और कटु शब्द भी सुनने पड़ जाते हैं।

वस्तुतः वृद्धावस्था मानसिक व्यथा का पर्याय है। आज न तो कोई वृद्धों की कद्र करने वाला है और न ही उनके अनुभवों से सीखने का जज्बा रखने वाला। अपने जीवन-साथी की मौत के उपरान्त तो एकाकी वृद्ध और अधिक सम्बल चाहता है। अधिकांश परिवारों में तो भाईयों के मध्य इस बात को लेकर विवाद होता रहता है कि वृद्ध माता-पिता का उत्तरदायित्व (बोझ) कौन निभाए।



यह सब जानकर वृद्ध माता-पिता कैसा संताप अनुभव करते होंगे, यह कल्पनातीत है। जिन माता-पिता ने अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर अपनी संतान का लालन-पालन, संवर्द्धन व विकास किया हो और उनके वृद्ध हो जाने पर वही संतान उन्हें भार समझे तो ऐसी स्थिति में वृद्धों की पीड़ा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। यह कैसी विडम्बना है कि जो माता-पिता दस बच्चों को पाल सकता है, परन्तु 10 बच्चे उन्हीं माता-पिता का भरण-पोषण नहीं कर सकते हैं?

बहुतेरे मामलों में पुत्र-पुत्रियाँ तब तक तो अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करते रहते हैं जब तक कि वे अपने पास का धन, सम्पत्ति, जमीन-जायदाद उनके नाम नहीं कर देते, पर सम्पत्ति, धन का हस्तान्तरण होते ही या वसीयत सम्पन्न होते ही पुत्र-पुत्रियाँ माता-पिता के प्रति नजर बदल देते हैं और फिर आरम्भ हो जाता है वृद्धों की व्यथा, दुःखद अवस्था का समाप्त न होने वाला दौर, अधिकांश मामलों में तो वृद्धों पर अपने पक्ष में जमीन जायदाद कर देने के लिए दबाव भी डाला जाता है और उन्हें प्रताड़ित भी किया जाता है। पराधीन होने के कारण वृद्ध अपने शौकों (धूम्रपान, संगीत, साहित्य अध्ययन, समाचार-पत्र वाचन) को भी पूरा कर पाने में असमर्थ होते हैं। अपने सामने अपने परिजनों की पतन की राह पर उन्मुख होते हुए देखने के लिए वे विवश होते हैं। उनके ज्ञान, सामर्थ्य, अनुभव व परिवर्कता का लाभ उठाने के लिए नई पीढ़ी तैयार ही नहीं है, क्योंकि उनके अनुसार पुरानी पीढ़ी कूपमंडूक, संकीर्ण व पिछड़ी रही है...

वस्तुस्थिति तो यह है कि पुरानी पीढ़ी नए विचारों, तौर-तरीकों, मान्यताओं और आधुनिकता को एकदम पचा नहीं पा रही है। इसलिए वह उद्वेलित, आक्रोशित व कुंठित (क्योंकि वह विवश है) होती रहती है। विचारों में असमानता व टकराव होने के कारण तनावपूर्ण स्थिति से सर्वाधिक दुष्प्रभावित वृद्ध ही होते हैं। न तो वृद्धों के मनोरंजन की सही व्यवस्था उपलब्ध है और न ही उनके समय को व्यतीत कराने वाला कोई माध्यम। परिजनों, नई पीढ़ी और समाज ने उन्हें निरर्थक, अनुपयोगी और नाकारा सिद्ध करके रख दिया है। जीवन की उत्तरावस्था में वृद्ध निःसन्देह अनेक कष्टों व समस्याओं से गुजर रहे होते हैं।

वृद्धों को चाहिए कि वे वृद्ध होने के पूर्व ही वृद्धावस्था हेतु निश्चित धनराशि बैंक में जमा करा लें या पेंशन-बीमा योजना के सदस्य बन जाएं सेवानिवृत्ति पर प्राप्त धनराशि को भी वे यदि स्वयं के लिए बैंक में जमा करके सुरक्षित रखें, तो उन्हें अर्थाभाव का सामना नहीं करना पड़ेगा। वृद्धों को चाहिए कि वे अपनी वसीयत करते समय उसे अपनी मृत्यु के उपरान्त लागू होने का प्रावधान कर दें, जिससे सम्पत्ति के प्रलोभन में ही सही, पर उनकी सन्ताने उनकी देखभाल तो करती रहेगी।

वृद्धों को चाहिए कि वे नई पीढ़ी को टोकने-डाँटने के स्थान पर अपने को रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रखने का प्रयास करें। अध्ययन, संगीत-श्रवण, सुबह-शाम की सैर को तो वह अपनाएं ही, एक वृद्ध-सभा बनाकर भी अपना दिल बहलाव करें, वृद्धों को चाहिए कि वे अपनी सार्थकता को सिद्ध करने के लिए यथासम्भव पारिवारिक कार्यों में मदद करें, बच्चों को कम्पनी दें, उन्हें पार्क-भ्रमण हेतु ले जाएं, कहानियाँ सुनाएं आदि। इस प्रकार उनकी उपयोगिता के कारण उनके पारिवारिक महत्व में वृद्धि होगी। वृद्धों को अपने पुराने विचारों को वर्तमान युग के अनुसार परिवर्तित करके ही नई पीढ़ी से व्यवहार करना होगा यह समय की माँग भी है और विवेक का तकाजा भी। आज दूरदर्शनी संस्कृति, पॉप म्यूजिक व स्वछंदता का युग है, ऐसे में वृद्धों को अपनी मान्यताओं को शिथिल करना ही होगा, तभी नई पीढ़ी से उनका अप्रिय टकराव टल सकेगा।

सरकार को भी चाहिए कि वह वृद्धावस्था पेंशन व अन्य प्रकार की सहायता का प्रावधान करे। वृद्धों की चिकित्सा हेतु भी विशेष अस्पतालों की व्यवस्था की जाए वृद्धाश्रमों की भी पर्याप्त रूप में व समुचित व्यवस्था अपरिहार्य है। वैसे वृद्धों को कानूनी संरक्षण भी प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे उन्हें उनके पुत्र-पुत्रियों से पर्याप्त गुजारा भत्ता दिलाया जा सके। वास्तव में वृद्धावस्था समस्याओं का घर है इसलिए स्वयं वृद्ध, संतान, सरकार और समाज सभी के सामंजस्यपूर्ण सहयोगात्मक रुख से ही वृद्धों की समस्याओं पर नियंत्रण पाने का सकारात्मक प्रयास किया जा सकता है।

### निष्कर्ष

वस्तुतः यह नई पीढ़ी, परिजनों और समाज का नैतिक दायित्व है कि वह वृद्धों के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक भाव व दृष्टिकोण रखे और उन्हें वेदना, कष्ट व संताप से सुरक्षित रखने हेतु सार्थक पहल करे। वास्तव में भारतीय संस्कृति तो बुजुर्गों को सदैव सिर-आँखों पर बिठाने और सम्मानित करने की सीख देती आई है। अगर परिवार के वृद्ध कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं, रुग्णावस्था में बिस्तर पर पड़े कराह रहे हैं, भरण पोषण को तरस रहे हैं, तो यह हमारे लिए लज्जा का विषय है। वृद्धों को



ठुकराना, तरसाना, सताना, भर्त्सनीय भी है और अक्षम्य अपराध भी. सामाजिक मर्यादा, मानवीय उद्घोष व नैतिक चेतना सभी हमें वृद्धों के प्रति आदर, संवेदना व सहानुभूति-प्रदाय की शिक्षा देते हैं. यथार्थ तो यह है कि वृद्ध समाज, परिवार और राष्ट्र का गौरव है. वृद्धावस्था बड़ी मुश्किल से आती है. पचास प्रतिशत व्यक्ति पचास वर्ष की अवस्था तक परलोकवासी बन जाते हैं. जो पचास वर्ष की आयु-सीमा पार करना चाहते हैं, उनको विशेष रूप से वृद्धजन के प्रति अपने दायित्व को समझना चाहिए.

### संदर्भ

- 1) वृद्धावस्था संबंधी निदान (वृद्धों के लिए तकनालॉजी समाधान पोर्टल)
- 2) 45\_प्लस\_इण्डिया - भारत के वृद्धजनों के लिये पोर्टल
- 3) International Federation on Aging — informs and promotes positive change for old people globally
- 4) एल्डर केयर आपके द्वार